MAKHANLAL CHATURVEDI NATIONAL UNIVERSITY OF JOURNALISM AND COMMUNICATION

// UNIVERSITY LIBRARY //

-: NEWS CLIPPING SERVICE -:

DATE:27 AUG. 2026

एमसीयू में 'गुरुजनों के लिए गीता' व्याख्यान आयोजित

'पहचान के संकट' का समाधान देती है गीता : डॉ. अग्रवाल

स्वदेश संवाददाता ■ भोपाल

माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में 'गुरुजनों के लिए गीता' विषय पर आयोजित विशेष व्याख्यान में प्रख्यात वक्ता डॉ. विजय अग्रवाल ने कहा कि श्रीमद्भगवद्गीता हमें 'पहचान के संकट' की समस्या का समाधान देती है। गीता और महाभारत 'क्राइसिस ऑफ आइडेंटिटी' की समस्या पर केंद्रित हैं। विशेष व्याख्यान की अध्यक्षता कुलगुरु प्रो. (डॉ.) विजय मनोहर तिवारी ने की। डॉ. अग्रवाल ने कहा कि गीता में आपको धर्म मिलता है और

इसमें धर्म की बहुत सरल व्याख्या है। स्वभाव के अनुकूल कार्य करना ही धर्म है, या फिर जो कार्य आपके लिए नियत कर दिया गया है, वही आपका धर्म है। कार्यक्रम के अंत में आभार प्रदर्शन सहायक एचयूयूयू प्राध्यापक डॉ. लालबहादुर ओझा ने किया और मंच संचालन सहायक प्राध्यापक डॉ. लोकेंद्र सिंह ने किया।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'SWADESH '27 AUG.2026

गुरुजनों के लिए गीता विषय पर कार्यशाला

जो अपनी पहचान भूल गया वह सही निर्णय नहीं कर सकता

पत्रिका plus रिपोर्टर
patrika.com

भोपाल. गीता जीवन जीने का वह ज्ञान है जो सफल बनाता है। अच्छे और बुरे की पहचान सिखाता है। जो व्यक्ति अपनी पहचान भूल जाए वह कभी भी सही निर्णय नहीं कर सकता है। ये बात लेखक डॉ. विजय अग्रवाल ने कही। माखनलाल चतुर्वेदी विवि में गुरुजनों के लिए गीता विषय पर उन्होंने व्याख्यान दिया। बोले श्रीमद्भगवद्गीता हमें पहचान के संकट' की समस्या का समाधान देती है। बताया यह केवल एक धार्मिक ग्रंथ नहीं है, बल्कि यह पर्सनालिटी डेवलपमेंट और मेंटल पीस कर प्रैक्टिकल 'मैनुअल' है। अध्यक्षता कुलगुरु प्रो. विजय मनोहर ने की।

ये मुख्य बातें

- डॉ. अग्रवाल ने कहा अर्जुन अपनी योद्धा वाली पहचान भूलकर पारिवारिक मोह में उलझ गया था।

व्यक्ति जब अपनी भूल पहचान भूल जाता है तब वह सही फैसला नहीं कर सकता। गीता हमें आइडेंटिटी क्राइसिस' से निकालती है।

- तनाव दूर करने की सबसे पुरानी साइकोलॉजी बुक- गीता दुनिया की पहली और सबसे पुरानी साइकोलॉजी की किताब है।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'PATRIKA '27 AUG.2026

जब पहचान भूलता है इंसान, गीता दिखाती है सही राह : डा. विजय

नवदुनिया प्रतिनिधि, भोपालः माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय (एमसीयू) में शिक्षकों, अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए 'गुरुजनों के लिए गीता' विषय पर विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया। मुख्य वक्ता डा. विजय अग्रवाल ने कहा कि श्रीमद् भगवद्गीता व्यक्ति के जीवन में आने वाले 'पहचान के संकट' का समाधान देती है। गीता और महाभारत के पात्रों के माध्यम से हमारे जीवन की समस्याओं को समझाया गया है। उन्होंने कहा कि कुरुक्षेत्र में अर्जुन की पहचान एक योद्धा की थी, लेकिन परिवार और रिश्तों को देखकर वह अपनी जिम्मेदारी भूल गया और युद्ध से पीछे हटने लगा। इसी तरह आज भी व्यक्ति कई बार अपनी वास्तविक जिम्मेदारी और पहचान को भूलकर उलझ जाता है। गीता ऐसे समय में सही निर्णय लेने का मार्ग दिखाती है।

मंच पर डा. विजय अग्रवाल और कुलगुरु प्रो. डा. विजय मनोहर तिवारी। • सौजन्यः आयोजक

उन्होंने गीता को दुनिया की सबसे पुरानी मनोविज्ञान की किताब बताते हुए कहा कि इसे कठिन नहीं, बल्कि जीवन जीने के सरल मार्गदर्शन के रूप में समझना चाहिए। डा. अग्रवाल ने कहा कि गीता में ज्ञान को सबसे पवित्र बताया गया है और गुरु के महत्व पर भी जोर दिया गया है। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलगुरु प्रो. डा. विजय मनोहर तिवारी ने की।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'NAVDUNIYA '27 AUG.2026

'गुरुजनों के लिए गीता' व्याख्यान का आयोजन
जीवन और कार्य के लिए बताया मार्गदर्शक

नईदुनिया प्रतिनिधि, भोपालः माखनलाल चतुर्वेदी राष्ट्रीय पत्रकारिता एवं संचार विश्वविद्यालय में 'गुरुजनों के लिए गीता' विषय पर विशेष व्याख्यान आयोजित किया गया। कार्यक्रम में प्रख्यात वक्ता डॉ. विजय अग्रवाल ने कहा कि श्रीमद्भगवद्गीता व्यक्ति को 'पहचान के संकट' से बाहर निकलने का मार्ग दिखाती है।

डॉ. अग्रवाल ने कहा कि महाभारत और गीता में अर्जुन के माध्यम से पहचान के संकट को समझाया गया है। कुरुक्षेत्र में अर्जुन की पहचान एक योद्धा की थी, लेकिन जब वह युद्ध से पीछे हटने लगा तो वह पारिवारिक संबंधों में उलझ गया। उन्होंने कहा कि जो व्यक्ति अपनी वास्तविक पहचान भूल जाता है, वह सही निर्णय नहीं ले पाता। उन्होंने गीता को दुनिया की सबसे पुरानी मनोविज्ञान की पुस्तकों में से एक बताते हुए कहा कि यह जीवन जीने का मार्गदर्शक है। गीता हमें अपने जीवन और कार्यक्षेत्र में सही दिशा चुनने की प्रेरणा देती है।

डॉ. अग्रवाल ने धर्म की सरल व्याख्या करते हुए कहा कि अपने स्वभाव और जिम्मेदारी के अनुरूप कार्य करना ही धर्म है। उन्होंने कहा कि श्रीकृष्ण ने अर्जुन को ज्ञान, कर्म और कर्तव्य का महत्व समझाया।

NEWS CLIPPING SERVICE FROM 'MCNUJC LIBRARY
'DANIK NAIDUNIYA '27 AUG.2026

दैनिक भास्कर   भोपाल   27-08-2026

MCU 'गुरुजनों के लिए गीता' में डॉ. विजय अग्रवाल बोले-

'मैं कौन हूं...' की उलझन का जवाब देती है श्रीमद्भगवद्गीता

सिटी रिपोर्टर • भोपाल

प्रख्यात वक्ता डॉ. विजय अग्रवाल ने कहा कि आज की बड़ी उलझन यह है कि हम अपनी पहचान को लेकर स्पष्ट नहीं हैं। करियर, परिवार और समाज में अलग-अलग भूमिकाएं निभाते हुए जब ये टकराती हैं, तो निर्णय लेना कठिन हो जाता है। एमसीयू में बुधवार को शिक्षकों अधिकारियों-कर्मचारियों के लिए आयोजित व्याख्यान 'गुरुजनों के लिए गीता' में उन्होंने कहा कि श्रीमद्भगवद्गीता और महाभारत हमारे भीतर चल रहे इसी द्वंद्व से संवाद करते हैं। अर्जुन का उदाहरण देते हुए कहा कि कुरुक्षेत्र में रिश्तेदारों को सामने देख वह योद्धा की भूमिका भूल गया। पहचान स्पष्ट न हो तो निर्णय भी स्पष्ट नहीं रहता।

डॉ. विजय अग्रवाल

दुनिया की सबसे पुरानी साइकोलॉजी बुक

डॉ. अग्रवाल ने गीता को दुनिया की सबसे पुरानी साइकोलॉजी की किताब बताते हुए कहा कि इसे कठिन ग्रंथ मानने की धारणा बदलनी चाहिए। गीता जीवन को समझने और फैसले लेने का व्यावहारिक मार्गदर्शन देती है। कार्यक्रम की अध्यक्षता कुलगुरु प्रो. (डॉ.) विजय मनोहर तिवारी ने की। संचालन सहायक प्राध्यापक डॉ. लोकेंद्र सिंह ने किया।